शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

भारत के पड़ोसी देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा का ऐतिहासिक अध्ययन

राहुल कुमार (शोधार्थी)
विरेन्द्र कुमार (शोधार्थी)
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय
मेरठ, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त भी भारत को अपनी सीमाओं पर निरन्तर इस समस्या का सामना करना पड़ा। अतः भारत की मुख्य समस्या सुरक्षा की खोज रही समस्त ऐतिहासिक अनुभव के आधार पर स्वतन्त्र भारत की सरकारों ने अपने पड़ोसी राष्ट्रों के साथ अनेक संधि व समझौते करने का प्रयास किया ताकि भविष्य में विदेशी आक्रमण का सामना नहीं करना पड़े और भारतीय सीमान्त सुरक्षित रह सकें। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों की पड़ताल की गयी है।

प्रस्तावना

साम्यवादी चीन के उदय और भारत चीन विग्रह के उभरने के बाद नेपाल व भूटान का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व बढ़ा क्योंकि ये दोनों ही राष्ट्र भारत व चीन के बीच के राज्य हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में प्रथमतः 1949 में भूटान के साथ, 1950 में नेपाल के साथ संधि सम्पन्न की। 1954 में भारत ने चीन के साथ पंचशील समझौता हस्ताक्षरित किया लेकिन शीघ्र ही यह समझौता असफल सिद्ध हुआ क्योंकि 1962 में ही चीन ने भारत पर आक्रमण कर उसके 22 हजार वर्ग मील क्षेत्र पर जबरन कब्जा कर लिया।

1965 में कच्छ के प्रश्न को लेकर पाकिस्तान भी भारत से उलझ गया। चीन व पाकिस्तान की नीति से भारत की सुरक्षा की समस्या बढ़ गई। पाकिस्तान से पुनः कोई विवाद न हो इसलिए सोवियत संघ के सहयोग से भारत ने 1966 में पाकिस्तान के साथ ताशकन्द समझौता सम्पन्न किया लेकिन शीघ्र ही बंगलादेश की समस्या पैदा होने के कारण भारत-पाक सम्बन्ध निम्नतम बिन्दु पर पहुँच गये। इस समय पाकिस्तान व अमेरिका के घनिष्ठ होते हुए सम्बन्ध भारतीय सुरक्षा के लिए निश्चय ही संकट उपस्थित कर सकते थे। अतः सुरक्षात्मक प्रयोजनों से भारत ने सोवियत संघ के साथ अगस्त 1971 में एक संधि सम्पन्न की जो कि तत्कालीन भारतीय परिस्थितियों में सुरक्षा प्रदान करने में सफल रही।

आठवें दशक की पूर्व सन्ध्या में बंगलादेश का उदय हुआ उस ओर से सुरक्षित होने के लिए मार्च 1972 में बंगलादेश के साथ शान्ति सुरक्षा संधि सम्पन्न की दूसरी ओर पूर्ववत सम्बन्ध बनाए रखने के लिये पाकिस्तान के साथ पुनः शिमला समझौता किया लेकिन इन समझौतों के बावजूद भी सुरक्षा प्राप्त नहीं हो सकी। यद्यपि पहले वाली स्थिति नहीं है लेकिन फिर भी सम्बन्ध सामान्य नहीं है।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

पाकिस्तान अब भी कश्मीर का विवाद अपनी इच्छानुसार ढंग से अन्तर्राष्ट्रीय सभा सम्मेलनों में उठाता रहता है। पाकिस्तानी सहायता न केवल पंजाब में सक्रिय आतंकवादियों को बल्कि भारत के अन्य भागों में भी विघटनकारी साम्प्रदायिक तत्वों के निरन्तर मिलती रहती है। पाकिस्तान भारत को राजनयिक दृष्टि से संकोच में डालने के लिये बार-बार सम्पूर्ण दक्षिण एशिया को परमाणु हथियार मुक्त क्षेत्र घोषित करने की मांग उठाता रहता है। नेपाल, बंगलादेश, श्रीलंका को भारत के प्रति शंकालु और द्वेषी बनाने में पाकिस्तान को सहायता मिली है। आजादी और विभाजन के 66 वर्ष बीत जाने पर भी भारत-पाक सम्बन्धों में सामान्यीकरण की अपेक्षा संकट निवारण और मैत्री की अपेक्षा शत्रुता के निर्वाह की प्राथमिकता बनी हुई है।

1975 में शेख मुजीबर रहमान की हत्या के बाद बंगलादेश से भी असुरक्षा पैदा हो गई और अनेक विवाद उत्पन्न हो गये, जैसे- शरणार्थियों की समस्या, नदी जल विवाद, भारत-बंगलादेश सीमा पर कांटेदार बाड़ पर विवाद, चकमा शरणार्थियों की वापसी की समस्या, चीन-अमेरिका से साँठ-गाँठ। यद्यपि भारत ने अपनी तरफ से इन विवादों को हल करने का प्रयत्न किया है लेकिन बंगलादेश अब पाकिस्तान की भाँति भारत को आँख दिखाता है।

पाकिस्तान साम्यवादी चीन, नेपाल व बंगलादेश के समान श्रीलंका भी भारत का निकटवर्ती पड़ोसी राष्ट्र है। श्रीलंका की तरफ से सुरक्षा की समस्या न पैदा हो इसलिये यहाँ भी भारत ने समझौते वाली नीति अपनाई और श्रीलंका की जातीय समस्या के समाधान के लिये पहले 1954 में फिर 1965 में समझौते किये लेकिन इन समझौतों का कोई परिणाम नहीं निकला और तमिल समस्या घटने के स्थान पर बढ़ गई। जुलाई 1987 में भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने श्रीलंकाई राष्ट्रपति जयवर्द्धने के साथ समझौता किया। समझौते के अन्तर्गत भारत ने अपनी सेनाऐं, तथा अन्य सेवाऐं श्रीलंका को भेजी लेकिन राष्ट्रपति जयवर्द्धने ने बहुत चतुराई से सिंहली सैनिकों को हटाकर तमिल व भारतीय सैनिकों को एक दूसरे के सामने खड़ा कर दिया। तमिलों के संगठन लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम ने श्रीलंका के स्थान पर भारत को अपना शत्रु माना और अपनी हिंसात्मक कार्यवाही भारत में भी शुरू कर दी। हमारे भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी की हत्या में भी इसी संगठन का हाथ था। वास्तव में श्रीलंका की तरफ से समझौतों के बावजूद भारत को सुरक्षा नहीं मिल सकी है।

भारतीय उपमहाद्वीप और सुरक्षा

भारतीय उपमहाद्वीप की सुरक्षा की दृष्टि से गम्भीर चिन्ता का एक अन्य कारण है पाकिस्तान में बढ़ती अमेरिकी व चीन की उपस्थिति बर्मा व बंगलादेश में चीन का बढ़ रहा प्रभाव भारत के चारों ओर घेराबन्दी बनाता जा रहा है। नागा, मीजों तथा भारत के उत्तर पूर्व में अन्य विद्रोहियों को चीन से मिलने वाली सैनिक सहायता भी इसी सन्दर्भ में देखी जानी चाहिए।

बाहरी शत्रुओं के अतिरिक्त देश के अन्दर भी कई ऐसी विचारधाराएँ हैं जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये गम्भीर खतरा बनी हुई हैं। प्रान्तीयता, जातिवाद, भाषावाद जैसे संकीर्ण विचार विघटनकारी तत्वों को प्रेरित कर रहे हैं इन्हीं से प्रेरणा पाकर, पंजाब, असम, नागालैण्ड, मणिपुर,

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

मिजोरम इत्यादि प्रान्तों में संकुचित राष्ट्रीयता जन्म ले चुकी है। एक अन्य तत्व आतंकवाद उत्तर हो या दक्षिण, पूर्व हो या पश्चिम भारत के प्रत्येक सीमान्त पर असन्तुष्ट तत्वों ने आतंकवादी हिंसा का अवलम्बन किया है। खालिस्तानी आतंकवादी हो या कश्मीरी आतंकवाद, श्रीलंका में असन्तुष्ट तमिल हो या फिर भारत-बंगलादेश की सीमा पर चकमा आदिवासी हो इन सभी ने भारत की सुरक्षा के आगे प्रश्न चिन्ह लगा दिया है।

मूलभूत संरचनागत कमजोरी की यह शुरुआत प्रधानमंत्री नेहरू के समय से ही जारी है जो वर्तमान राष्ट्रीय सुरक्षा प्रबंधन के तहत भी बनी हुई है। स्थिति सुरक्षा प्रबंधन के तहत भी बनी हुई है। स्थिति यह है कि राष्ट्रीय सुरक्षा का यह दायित्व रक्षा सचिव पर निर्भर है और सेना मुख्यालय को रक्षा मंत्रालय से संबद्ध रखा गया। है। यदि प्रधानमंत्री मोदी अपने पूर्वर्ती मनमोहन सिंह द्वारा चिह्नित की गई मुख्य चुनौतियों पर ध्यान देंगे तो उन्हें समस्याओं के समाधान में काफी मदद मिल सकती है। हर वर्ष प्रधानमंत्री शीर्ष सैन्य अधिकारियों से मिलते है, लेकिन बावजूद इसके इतनी कम प्रगति कैसे हो सकी है। मनमोहन सिंह को तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिंह राव ने वित्त मंत्री के तौर पर चुना था और नीतियों में बदलाव के लिए उन्हें पूरी आजादी और छूट दी थी। इस तरह दमनकारी लाइसेंस राज का खात्मा हुआ था शेष सब कुछ अब इतिहास है कि किस तरह भारत आगे बढा और आज वह एक बड़ी वैश्विक आर्थिक शक्ति है। राष्ट्रीय सुरक्षा सुधारों के लिए भी आज कुछ वैसा ही करने की आवश्यकता है। सवाल है कि क्या नरेन्द्र मोदी नरसिंह राव जैसा ही कुछ कर सकेंगे ?

भारत-चीन सीमा विवाद

भारत और चीन के संबंध कोई दशकों से सीमा विवाद के चलते उतने प्रगाढ़ नहीं हो पाए जितने होने चाहिए। 1962 के युद्ध के दौरान भारतीय भू-भाग पर कब्जा करने वाला चीन अरूणाचल पर गिद्ध दृष्टि लगाए है। बीजिग समझ रहा है कि भारत तेजी से प्रगति करता देश है जिसके पास मजबूत श्रमशक्ति और बाजार है। चीन इसीलिए भारत के साथ व्यापारिक संबंधों को मजबूत बनाने की कोशिश करता रहता है। दोनों के बीच सीमा विवाद को लेकर बैठकें भी होती हैं। लेकिन नापाक हरकतों से वह भारत को यह सोचने के लिए मजबूर कर देता है कि उस पर आंख मूंद कर विश्वास नहीं किया जा सकता है।

चीन ने अपने सीमाई क्षेत्रों में विगत दो दशकों से जिस तरह सड़कों का जाल बिछाया है और तिब्बत में भी रेल लाइन का विस्तार करते हुए अरूणाचल और सिक्किम के नजदीक तक पहुंच गया है उससे उसके इरादे साफ होते हैं। भारत को अब कड़ी निगाह रखनी होगी। तिब्बत से सिगेज तक चीन का रेल लाइन सेवा पूरी हो चुकी है। यह क्षेत्र सिक्किम से सटा हुआ हे। वह अब जरूरत पड़ने पर अपनी सेना और सैन्य साजोसामान पहुंचा सकता है। क्या पता किसी मामले में लेन-देन की नीयत से वह सिक्किम के भी किसी नजदीकी सीमाई क्षेत्र में घुसकर भारत से अपनी बात मनवाने की कोशिश करे। चीन को भारत से सटे सीमाई इलाकों में सड़क और रेल लाइन बिछाने से कई फायदे एक साथ हैं। पहला यह कि सुदूर के इलाको में दोनों के वजूद में

आने से ये क्षेत्र सीधे तौर पर बीजिंग की जद में आ जाते हैं। उस परिस्थिति में अपनी सैन्य ताकत और अपने विकास के चीनी माडल के एजेंडे के तहत वहां की सरकार अपनी विस्तार नीति आगे बढ़ाती है। दूसरी, यह भी हो जाता है कि जब विकास होता है। तो वहां के लोग चीन का गुणगान करने से गुरेज नहीं करते। तीसरा, विस्तार नीति से वह भारत को चेक करते हुए बेलेंसे की स्थिति को बनाता है। भारत की चिंताओं को बढ़ाने में उसकी इस तरह की पहल कारगर भी होती है। चौथा फायदा चीन में रोजगार की वृद्धि होती है और वहां का आधारभूत ढ़ांचा मजबूत होता है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि रेल, सड़क विकास के माध्यम से चीन एक साथ कई लक्ष्य हासिल करने से सफल रहा हे। बहरहाल, चीन की ल्हासा-सिगेज 235 किलोमीटर लंबी रेल लाईन अक्टूबर तक तैयार हो जाएगी। इस पर चीन की ट्रेन 120 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ेगी। इस तरह ल्हासा से यहां पहुंचने में कुल दो घंटा लगेगा। सड़क के रास्ते यहां पहुंचने में 5 से 7 घंटे लगते है।

इस हिमालयन इलाके में मौसन बड़ी समस्या पैदा करता है। यहां भूस्खलन आम है। ऐसे में एक-दूसरे से जुड़ना कभी-कभी मुश्किल होता हैं क्विंगहाई और तिब्बत रेल लाइन (1956 किमी) चीन के लिए हार्ट लाइन साबित हो रही है। स्थानीय लोग चीन की लाइफलाइन को समझ रहे हैं। इस इलाकों में पर्यटन भी तेजी से बढ़ रहा है।

सबसे बड़ी बात रणनीतिक रूप से चीन भारत पर दबाव बना चुका है। वह अहसास करा रहा है कि जरूरत पड़ने पर चीनी सेना कुछ ही घंटों में भारत की सीमा के नजदीक आ खड़ी हो सकती है। बात यही तक होती तो ठीक, चीन अब भारत से लगे अपने सीमाई हिमालयन रीजन में पांच विकसित एयरपोर्ट का निर्माण कर चुका है। चीन की इन कोशिशों ने भारत को मजबूर कर दिया है कि वह अपने सीमाई रीजन का विकास करे। वैसे भारत भी चीन की कवायद और उसकी दूरगामी रणनीति को बेहतर तरीके सोच रहा है। यहां की सरकार भी चीन और पाकिस्तान से सटे अपने सीमाई क्षेत्र के विकास के लिए कई महत्वपर्ण कदम उठाए हैं। अरूणाचल-सिक्किम से लेकर पाक से लगे अपने हिमालय रीजन में भारत भी सड़कों का जाल बिछा रहा है। पूर्व रक्षा मंत्री एके एंटनी से संसद में बताया था कि सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) की कोशिशों के चलते भारत ने चीन से लगी 73 सड़कों का नवीकरण कर दिया है। उन्होंने इससे साफ इनकार किया कि भारत की कोई योजना चीन से लगी सीमा पर फोर लेन सड़क निर्माण की है। एंटनी के मुताबिक सिक्किम में 13 किलोमीटर, अरूणाचल में 149.98 किमी, उत्तराखंड में 186.73 किमी, हिमाचल में 114.5 किमी और जम्मू कश्मीर में 384.28 किमी लंबी सड़क का निर्माण विगत पांच सालों में हुआ। बावजूद इसके एक संसदीस समिति रक्षा मंत्रालय के दावों को जरूरत के मुताबिक सही नहीं मान रहीं है। समिति के मुताबिक चीन की तैयारियों की तुलना में भारत की तैयारी संतुलित नहीं कही जा सकती। पार्लियामेंटरी पैनल के मुताबिक बात सिर्फ सड़कों के निर्माण की ही नहीं है। तकनीकी पहलूओं के स्तर पर भी संतुलन की जरूरत होती है जिसको भारत पूरा नहीं कर पर रहा है। उक्त पैनल की रिपोर्ट के बाद भी सरकार अपने दावे पर कायम

है कि रणनीतिक रूप से जरूरत के मुताबिक किसी विषम चुनौती का सामना करने के लिए जितनी रोड कनेक्टिविटी की जरूरत है, भारत उस पर आगे बढ़ रहा है। यही नहीं रक्षा मंत्रालय का दावा है कि भारत चीन सीमा पर सड़कों का निर्माण और उनका आधुनिकीकरण तेजी से चल रहा है। अधूरे काम पूरा करने के लिए बीआरओ की कई टीम लक्षित स्थान पर भेजी गई हैं। हाल ही में बीआरओ की 46 यूनिट अरूणाचल में 21 सिक्किम और 33 उत्तराखण्ड डमें भेजी गई हैं। इसके अतिरिक्त हिमाचल में सात और जम्मू कश्मीर में सबसे ज्यादा 61 यूनिट काम कर रही है ताकि सड़क परियोजनाएं निर्धारित समय पर पूरी की जा सके। यही नहीं इस वर्ष के अस्थायी बजट में भी जिस तरह से पूर्वोत्तर के अरूणाचल तक रेल मार्ग के विस्तार की संकल्पना की गई है। इदसके पीछे उद्देश्य यही है कि भारत के संवेदशील राज्य जिनकी सीमाएं चीन और पाकिस्तान से लगती हैं वहा रेल पटरियां बिछ जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त भारत-चीन सीमा पर हेलीपैड भी बनाने पर जो दे रहा है। लेकिन सिर्फ योजना बना देने भर से काम चलने वाला नहीं है। सच तो यह है कि इसके लिए भारी बजट की जरूरत होगी। उसकी इंतजाम कैसे होगा और अतिरिक्त धनराशि कहां से आएगी, सरकार को यह भी बताना पड़ेगा। अन्यथा हमें यह मानने से संकोच नहीं होना चाहिए कि चीन हमसे इस मामले में काफी आगे निकल चुका है। उसने वह काम पूरा कर लिया है जिसे हम अभी शुरू कर रहे हैं। जाहिर है, पड़ोसी की रणनीतिक पहल हमसे बेहतर है। ऐसे में किसी भी आकस्मिक परिस्थिति में वह हमसे बीस साबित होते हुए बाजी भी मार सकता है। हालाकि अब भारत की स्थिति भी 1962 की तरह नहीं है। लेकिन नए परिवेश में शक्ति संतुलन के जरिए ही कई हित साधे जाते है। जिसमे चीन हम से आगे है।

चीन का रक्षा बजट

चीन ने रक्षा क्षेत्र में बढत हासिल करने के उद्देश्य से अपने रक्षा बजट में भारी वृद्धि करने का निर्णय लिया है। पांच मार्च को चीनी संसद 'नेशलन पीपुल्स कांग्रेज' के समक्ष प्रधानमंत्री ली कीकियोग द्वारा पेश किए बजट संबधी प्रस्तावों के अनुसार चीन ने इस साल अपना रक्षा बजट 12.2 प्रतिशत बढ़ाकर 808.2 अरब युआन अर्थात लगभग 132 अरब डालर कर दिया है। इससे पहले वर्ष 2013 में चीन ने अपने रक्षा बजट पर 720.197 अरब युआन यानी लगभ 117.7 अरब डालर खर्च किए हैं जो कि वर्ष 2012 की तुलना मं 10.7 प्रतिशत ज्यादा था। विदित हो कि वर्ष 2012 में चीन का रक्षा बजट 13900 करोड़ डालर यानी कि लगभग 8.7 लाख करोड़ रूपये था। गौरतलब है कि इस वर्ष चीन की तुलना में भारतीय रक्षा बजट काफी कम आवंटित हुआ है। कहने को तो पिछले वर्ष के मुकाबले इसमे 10 प्रतिशत का इजाफा किया गया है लेकिन मुद्रास्फीति और डालर के मुकाबले रूपये की गिरी कीमत के आधार पर आकलन करें तो इसमें कटौती कर दी गई है। अगर डालर के हिसाब से देखें तो अगले वर्ष के लिए रक्षा बजट के लिए 36.2 बिलियन डालर का प्रावधान किया गया है, जबकि इससे पहले का रक्षा बजट 37.5 बिलियन डालर था। इस तरह भारत का रक्षा बजट 1.3 बिलियन डालर कम कर दिया गया है।

इस तरह यह स्पष्ट हो जाता है कि चीन ने भारी भरकम धनराशि रक्षा क्षेत्र के लिए बढ़ाई है। इससे उसका यह इरादा भी सामने आ गया है कि वह सैन्य क्षेत्र मे दुनिया के शक्तिशाली देशों की तुलना मे सबसे ऊपर रहना चाहता है। यहां गौरतलब बात यह है कि पेंटागन और कई नाटों देशों ने अपने रक्षा बजट में वृद्धि करने की बजाए कटौती की है। रक्षा बजट मे कटौती चे चलते ही अमेरिका के सैन्य खर्च में गिरावट आई है। अमेरिका ने हाल अपना रक्षा बजट घटाते हुए 57500 करोड़ डालर अर्थात लगभग 36 लाख करोड़ रूपये रखा है जो वर्ष 2012 की तुलना में काफी कम है। वर्ष 2012 में अमेरिका का रक्षा बजट 66400 करोड़ डालर यानी 41.60 लाख करोड़ रूपये था। रक्षा उद्योग परामर्श और विश्लेषक कंपनी 'आइएचएस जैन्स' का कहना है कि चीन पिछले कई वर्षों से अपना सैनिक खर्च लगातार बढ़ रहा है। अगर यह सिलसिला जारी रहाता अगले वर्ष तक चीन का रक्षा बजट ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी के संयुक्त रक्षा बजट से भी अधिकम हो जाएगा। इसी तरह की स्थिति रहने पर वर्ष 2024 तक चीन का सैन्य खर्च पूरे पश्चिमी यूरोप से भी ज्यादा हो जाएगा।

वैश्विक रक्षा खर्च के स्तर पर देखा जाए तो अमेरिका दुनिया के कुल रक्षा बजट का 41 प्रतिशत खर्च करता है। इसके बाद दूसरे स्थान पर चीन व तीसरे स्थान पर रूस है। इनकी भागीदारी क्रमशः 8.2 व 4.1 प्रतिशत है। इस फेहरिस्त में भारत सातवें स्थान पर है। और वैश्विक रक्षा खर्च में उसकी भागीदारी 2.8 प्रतिशत है। चीन के रक्षा बजट में सालाना वृद्धि औसतन 13 फीसद होती है। विदित हो कि चीन ने अपने रक्षा बजट में वर्ष 2011 में 12.7 फीसद वर्ष 2012 में 11.2 फीसद एवं वर्ष 2013 में 11 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी की थी। इस साल की गई रक्षा खर्च की बढ़ोतरी के चीनी कदम से यह आशंका बढ़ गई है कि लंबे समय से जारी क्षेत्रीय विवादों को लेकर पड़ोसी देशों के साथ चीन का तनाव बढ़ेगा।

हालंकि चीन के रक्षा विशेषज्ञ इस वृद्धि को देश की रक्षा जरूरतों के मुताबिक जायज ठहराते हैं, क्योंकि चीन क्षेत्रफल के हिंसाब से दुनिया का सबसे बडा देश है। चीन की अंतरराष्ट्रीय भू-सीमा 22 हजार किलोमीटर तथा समुद्री सीमा 18 हजार किलोमीटर है। कोई भी देश अपनी रक्षा तैयारियां अपनी सीमाओं की रक्षा करने और दुश्मन देश की ताकत से मुकाबला करने के लिए करता है। इसी दृष्टिकोण से बजट मे धन का प्रावधान किया जाता है।

चीनी संसद नेशनल पीपूल्स कांग्रेज के प्रवक्ता फूयिंग ने अपने रक्षा बजट में वृद्धि का बचाव करते हुए कहा कि अपने इतिहास और अनुभव को देखते हुए हमे लगता है कि शांति केवल ताकत से ही बरकरार रखी जा सकती है। चीन के रक्षा क्षेत्र में किए जाने वाले खर्च को पश्चिमी देशों में चिंता के तौर पर देखा जाता रहा है। इस पर पीपुल्स लिबरेशन आर्मी नौसेना की विशेषज्ञ सलाह समिति के निदेशक यिन जुओं का कहना है कि चीन का रक्षा व्यय अब भी उस स्तर से कम है जिसकी चीन को जरूरत है क्योंकि चीन बढ़ती सुरक्षा चुनोतियों का सामना कर रहा है।

चीन का कहना है क उसके रक्षा खर्च का आकार हालांकि अमेरिका के बाद दूसरा है, लेकिन इसे यदि प्रति व्यक्ति तथा समूची अर्थव्यवस्था के अनुपातिक आधार पर देखा जाए तो यह अमेरिका रक्षा बजट के छठें हिस्से के बराबर है।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

चीन का कहना है कि उसकी रक्षात्मक सैन्य नीतियां एशिया में शांति व स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उसने उन अटकलों को भी खारिज किया है, जिनमें कहा गया था कि विवादित द्वीपों को लेकर जापान और अन्य देशों के साथ चल रहे गतिरोध के मद्देनजर रखकर चीन ने रक्षा खर्च मे वृद्धि की है। हालाकि कई अंतरराष्ट्रीय रक्षा विश्लेषकों का मानना है कि चीन का रक्षा बजट उसके द्वारा घोषित सुरक्षा खर्च से कहीं अधिक होता है, जबकि चीन का कहना है कि वह रक्षा बजट की वास्तविक राशि के बारे में ही घोषणा करता है। यूरोपीय विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यह स्थिति रही तो आने वाले कुछ वर्षों में चीन का कुल रक्षा बजट जापान, भारत व एशिया-प्रशांत क्षेत्र के दस देशों के संपूर्ण रक्षा बजट से ज्यादा हो जाएगा।

यह चीन के भारी-भरकम रक्षा खर्च का ही नतीजा है कि इस वर्ष उसके पहले जंबो जेट विमान सी-919 के उड़ान भरने की संभवना है। अपने नई पीढी के विमानों के लिए रूस के कलपुजों पर आश्रित चीन अब खुद इनका निर्माण करेगा। विदित हो कि चीन वायु सेना में तेजी से विस्तार अनेक प्रकार के उन्नत जैट विमान बनाने के बावजूद चीन रडार को चकमा देने में माहिर स्टील्थ विमान जे-30 आदि के लिए रूस व अन्य देशों में बने इंजनों पर निर्भर है। चीन के जएफ-17 थंडर लड़ाकू विमानों में भी रूस के इंजन का प्रयोग किया जाता है। इन विमानों का निर्माण चीन व पाकिस्तान संयुक्त रूप से करते है। जे-18 जेट विमान में भी विदेशी इंजन लगाया गया है। इसे चीन के पहले विमानवाहक पोत पर शामिल किया, गया है। सशस्त्र सेनाओं को आधुनिक बनाने के उद्देश्य से चीन अब जेट व स्टील्थ श्रेणी के अत्याधुनिक लड़ाकू विमानों के अपने बेड़े में शामिल कर रहा है। अब भारत सरकार के गृहमंत्रालय की सात साल पुरानी एक रपट की धूल हम ही झाड़ देते हैं। सन् 2006 की 'आंतरिक सुरक्षा की स्थिति विषय पर रिर्पाट में स्पष्ट बताया गया था कि देश का कोई भी हिस्सा नक्सल गतिविधियाँ से अछूता नहीं है। क्योंकि यह एक जटिल प्रक्रिया है राजनीतिक गतिविधियाँ, आम लोगों को प्रेरित करना, शस्त्रों का प्रशिक्षण और कार्रवाइयाँ। सरकार ने उस रिपोर्ट मे स्वीकारा था कि देश के दो-तिहाई हिस्से पर नक्सलियों की पकड़ है। गुजरात, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर में भी कुछ गतिविधियाँ बेल्टों-भिलाई-रांची, धनबाद-कोलकाता और मुंबई-पुणे-सूरत-अहमदाबाद में इन दिनों नक्सली लोगों को जागरूक करने का अभियान चलाये हुए हैं। इस रपट पर कार्रवाई, खुफिया सूचना, दूरगामी कार्ययोजना का कही अता-पता नहीं है। बस जब कोई हादसा होता है तो सशस्त्र बलों को खूनखराबे के लिए जंगल में भेज दिया जाता है। इस पर जिम्मेदारी नहीं तय की जाती है कि तीन सौ नक्सली हथियार लेकर तीन घंटों तक गोलियाँ चलाते हैं, सड़कों पर लैंड माईन्स लगाई जाती है और मुख्य मार्ग पर हुई इतनी बड़ी योजना की खबर किसी को नहीं लगती है। भारतीय उपमहाद्वीप में भारत आकार, आबादी, शक्ति सामर्थ्य, सम्भावना और क्षमता की दृष्टि से अपने पड़ोसी देशों की तुलना में दैत्याकार है। परिणामतः भारत के छोटे पड़ोसी राष्ट्र स्वयं को असुरक्षित अनुभव करते हैं। अतः वे महाशक्तियों से राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक सम्बन्ध जोड़कर भारत की बराबरी करना

चाहते हैं। पाकिस्तान के सम्बन्ध में यह तथ्य विशेष रूप से अधिक सारगर्भित नजर आता है। भारत को अपने पड़ोसियों से सम्बन्ध बनाते समय इस रूझान को निष्क्रिय करने का भी प्रयास करना चाहिये।

भारत की रक्षा समस्या और समाधान

भारत के प्रशासक देश की आर्थिक नीति का निर्माण इस प्रकार करें जिससे राष्ट्र अधिकाधिक क्षेत्रों में स्वालम्बी हो विदेशी ऋण भार में कमी हो काले धन पर रोक लगे आर्थिक भ्रष्टाचार पर रोक लगे। आर्थिक रूप से सुदृढ़ भारत ही राजनीतिक रूप से स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम रह सकता है।

हमें अपनी आन्तरिक समस्याओं भ्रष्टाचार साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भाषावाद का समाधान करना होगा। आज देश में जगह-जगह धर्म के नाम पर हिंसा का तांडव नृत्य हो रहा है जिसने देश की एकता व अखण्डता को झकझौर कर रख दिया है।

सीमा पर हलचलें और उस दबाव से निबटने लायक सेना का आधुनिकीकरण नहीं। यह काम पिछले छः दशकों से अटका पड़ा।

2014 की पहली सबसे बड़ी चुनौती हमारे सामने चीने से आ रही है। चीन हमारी मुख्य प्रतिद्वंद्वी है और वह निरंतर अपने को ताकतवर कर रहा है।

पाकिस्तान की इंटेलीजेंस एजेंसी, आर्मी और उसकी पूरी सरकार इस लक्ष्य के मद्देनजर भारत के खिलाफ गुप्त रूप से कई सारे आपरेशन चला रही।

सीमाओं की अखंडता बरकरार रहे और हमारी सेनाएं देश की सुरक्षा और सीमाओं की रक्षा डटकर कर सकें, इसके लिए अपने रक्षा उद्योग को भी उन्नत और आधुनिक बनाना होगा।

रक्षा क्षेत्र संबंधी सार्वजनिक क्षेत्र के निकाय कुछ भी ढंग का बना पाने में कामयाब नहीं हो पाए हैं। इसलिए हमें 2014 में एक नया माडल ढूंढने की जरूरत है जिसमें निजी क्षेत्र की भूमिका हो। सैनिक सामान और हथियार बनाने वाली कम्पनियों के साथ सांठगांठ कर उनसे तकनीक पाने पर जोर देना चाहिए। इसमें दोनों ही पक्षों के लिए फायदेमंद फार्मूला निकलता है।

अगर सैन्य क्षमता को विदेश नीति के साथ जोड़ दिया जाए तथा सैन्य क्षमता में इजाफा किया जाए तो दूसरे देश बहुत संभल कर हमारे साथ बातचीत करेंगे।

इन चुनौतियों से निबटने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारा आंतरिक सुरक्षा का ढांचा सुदृढ़ हो। परन्तु दुर्भाग्य से यह एकदम लचर स्थिति में है। सुधार के जो प्रयास हो रहे हैं, उनका बराबर राजनैतिक और प्रशासनिक स्तर पर विरोध होता है। पुलिस सुधार के लिए सुप्रीम कोर्ट ने 2006 में निर्देश जारी किए थे। परन्तु राज्य सरकारें उनको लागू करने में हिला-हवाला कर रही है। केन्द्र सरकार की भी कोई प्रतिबद्धता नहीं दिखती। प्रदेशों में, राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण, पुलिस व्यवस्था जर्जर हो चुकी है। पुलिस में जनशक्ति की भारी कमी है। कुल मिलाकर करीब पाँच लाख रिकित्यां हैं। संसाधनों की भी भारी कमी है। प्रदेश में अधिकांश नेता पुलिस को केवल अपनी राजनैतिक लक्ष्यपूर्ति का साधन मानते हैं। सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए केन्द्र सरकार कोई योजना बनाती है, तो उसका विरोध किया जाता है। यही कारण है कि आज तक एन.सी.टी.सी. का गठन नहीं हो सका।

केन्द्र सरकार भी अपने स्तर पर कम दोषी नहीं है। वह सी.बी.आई. का दुरूपयोग करती है और उसे स्वयत्तता नहीं देना चाहती। हाल में इशरत प्रकरण को लेकर सी.बी.आई. और इंटेलिजेंस ब्यूरो में पारस्परिक विरोध हुआ, जिसका राष्ट्रीय सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। दुर्भाग्य से भारत सरकार मूक दर्शक बनी रही।

आर्थिक आतंकवाद की एक नई चुनौती भी भारत के सामने आ गई है। नकली नोट भारी संख्या में पाकिस्तान द्वारा भारत में भेजे जा रहे हैं। हमारी अर्थव्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने के लिए। कुल मिलाकर राष्ट्रीय सुरक्षा का परिदृश्य अत्यन्त गंभीर है, उसे भयावह कहा जा सकता है। परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर इन चुनौतियों से लड़ने के लिए न तो कोई गंभीर सोच है और नहीं कोई सुस्पष्ट नीति। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारा नेतृत्व देश की अखंडता और संप्रभुता से समझौता करने के लिए बराबर तैयार है।

भारतीय नीति-निर्माता 1971 में भारत-पाक युद्ध के दौरान पेंटगन द्वारा यू.एस.एस. इंटरप्राइज,ह परमाणु क्षमता से लैस एयरक्राफ्ट कॅरियर, बंगाल की खाड़ी में भेजे जाने से भौंचक थे। भारत के राजनीतिक माहौल में 1993 में उस समय गुस्सा पसर गया था, जब अमेरिका के सहायक विदेश मंत्री राॅबिन राफेल ने उस दस्तावेज की वैधता को ही चुनौती दे दी थी, जिसके आधार पर कश्मीर भारत में शामिल हुआ। भारत सरकार 2009 में चकरा गई थी, जब ओबामा प्रशासन ने अफगानिस्तान, पाकिस्तान और कश्मीर के लिए विशेष दूत नियुक्त किये जाने की बात कही। यह कश्मीर मुद्दे को अफगान-पाक समस्या के तुल्य मानने सरीखी बात थी।

बेशक, 2005 में भारत-अमेरिका सिविल न्यूक्लियर डील के समय दोनों देशों के सम्बन्धों में जो रवानी थी, वैसी तो मुश्किल है। हालांकि उसके बाद भी भारत-अमेरिका के बीच व्यापार एवं वाणिज्य, ऊर्जा, कृषि शोध, आतंकवाद, सैन्य सहयोग, रक्षा व्यापार जैसे तमाम मुद्दों पर गहन विचार-विमर्श हुए हैं। दोनों देशों की सरकारों ने इन मुद्दों पर नियमित बातचीत चलाए रखी है। लेकिन भारत-अमेरिका सामरिक भागीदारी को आगे बढ़ाने की गरज से काफी कुछ किए जाने की जरूरत है। इस लिहाज से कई मुद्दे हैं, जिन पर चर्चा जारी है, और जिनके समाधान आवश्यक हैं।

भारत ने अमेरिका के साथ प्रमुख रक्षा खरीद अनुबंध-बीते छः वर्षों के दौरान करीब दस बिलियन अमेरिकी डालर के किए हैं, जो किसी भी अन्य देश के साथ किए गए अनंबंधों की तुलना में ज्यादा है। लेकिन किसी भी अमेरिकी रक्षा उपकरण को लेकर सह-उत्पादन समझौता नहीं हुआ है। भारत ने इस प्रकार के सह-उत्पादन समझौता भारतीय रक्षा उद्योग का आधार मजबूत करने के मद्देनजर किए हैं। अमेरिकी हथियार निर्यात नियंत्रण अधिनियम की पेचिदगियों के चलते यू.एस./ए.ई.सी.ए. या भारत की जरूरतों के मद्देनजर उत्पादन-समर्थन/सहायता की गरज से आपूर्तिकर्ता की गारंटी में कोई ज्यादा बदलाव किए बिना ऐसे कार्यक्रम की बंदोबस्ती के लिए बहुत कुछ किया जाना है।

भारत के परमाणु ऊर्जा केन्द्रों की अमेरिका द्वारा आपूर्ति के लिए अंतिम अनुबंध होने में विलम्ब और भारत की तरह से इसे लेकर लेट-लतीफी पर अमेरिका में खासी निराश है। इस प्रकार के अनुबंध में प्रमुख बाधा भारत असैनिक परमाणु

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

जवाबदेही अधिनियम रहा है। यह असैनिक परमाणु जवाबदेही अधिनियम रहा है। यह एक ऐसा मुद्दा है जिसका समाधान निकालने की दोनों सरकारों पर जवाबदेही है, जिससे दोनों पक्षों के हित सधें। इस मुद्दे पर समाधान, जैसे कि अन्यों के मामलों में हुए हैं, निकालने के लिए दोनों तरफ से पहल किये जाने की दरकार है। साथ ही, दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति की भी जरूरत है। इन तमाम बातों के दृष्टिगत जरूरी है कि दोनों तरफ के राजनीतिक और राजनयिक तबके लगातार और प्रभावी ढंग से विचार-विमर्श जारी रखें। हाल में हुई घटना जैसी बातें होती रहीं तो दोनों पक्षों का सार्थक बातचीत के पथ से विचलन होगा और वे उकसाने वाली बातों में ही उलझे रह जाएंगे।

निष्कर्ष

इस प्रकार अनेक समझौते सम्पन्न करने के उपरान्त भी भारत सुरक्षा की खोज के प्रयास में पूर्णतः सफल नहीं हो सका है और आज भी समस्या के समाधान के लिये प्रयत्नशील है। लेकिन जहाँ सरकार संधि और समझौतों के माध्यम से सुरक्षा प्राप्त करना चाहती है वहाँ भविष्य में उसे आन्तरिक समस्याओं का समाधान भी करना होगा।

सर्वप्रथम हमें अपने निकटवर्ती पड़ोसी राष्ट्रों से सम्बन्ध सुधारने होंगे उनके साथ जो विवाद उत्पन्न हो गये हैं उनका समाधान करना होगा। पाकिस्तान के साथ भारत के सम्बन्ध सुधारने के लिये दोनों ओर से गम्भीर प्रयास करने होंगे। इसके लिए पहले बुनियादी समस्या कश्मीर जो कि भारत-पाक सम्बन्धों में तनाव और वैमनस्य का सबसे बड़ा कारण रहा है, का समाधान करना होगा।

भारत के सबसे बड़े पड़ौसी राष्ट्र चीन के साथ भी प्रारम्भ से ही सीमा विवाद है इस प्रश्न पर 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण कर हमारी हजारों मील भूमि पर कब्जा कर लिया लेकिन समस्या ज्यों की त्यों बनी रही यद्यपि चीन से सीमा विवाद को हल करने के लिए कई प्रस्ताव लाये गये जैसे- 1962 की सैनिक भिड़न्त के बाद कोलम्बों योजना जिसे चीन ने मानने से साफ इन्कार कर दिया फिर एक मुश्त योजना चीन काफी समय तक सीमा विवाद के हल के लिये इस समझौते की पेशकश करता रहा लेकिन भारत ने इसे मानने से इंकार कर दिया क्योंकि इस समझौते के अन्तर्गत भारत को न केवल अक्साई चिन बल्कि 5000 वर्ग मील वाले अतिरिक्त इलाके से भी हाथ धोना पड़ता। जब दोनों देशों ने एक-दूसरे के प्रस्तावों को नहीं मानता अधिकारी स्तर की वार्ताओं के कई दौर होने पर भी कोई प्रगति न हो सकी वार्ताएं मात्र अनुष्ठान बन कर रह गयी हैं। दोनों देशों को चाहिये कि वे इन वार्ताओं के पूर्व वैकल्पिक तौर पर एक दूसरे को मान्य होने वाले ठोस प्रस्ताव तैयार करने पर ध्यान केन्द्रित करें। इससे सीमा विवाद की विभिन्न जटिल पहलुओं पर ठोस बातचीत करने में मदद मिलेगी। हमारे जिन राज्यों की सीमायें पड़ोसी राष्ट्र चीन, पाकिस्तान व बंगलादेश से मिलती है उन राज्यों के आर्थिक विकास पर अधिक ध्यान दें वहाँ संचार व्यवस्था की उत्तम व्यवस्था की जाये, शिक्षा के समुचित साधनों का विकास किया जाये। ऐसा करने से इन राज्यों के व्यक्ति पड़ौसी राष्ट्रों के प्रलोभनों में नहीं आ सकेंगे। जिससे स्थायी शान्ति व

सुरक्षा की स्थापना होगी। भारत को अपने पड़ोस में बढ़ते हुए सैन्यीकरण की ओर विशेष ध्यान रखना अनिवार्य है। हमारे पड़ोसी पाकिस्तान की नवीनतम रणनीति में पंजाब तथा कश्मीर में इसकी निम्न स्तरीय युद्ध कला तथा परमाणु आयाम सम्मिलित हैं। सबसे अधिक चिन्ता का विषय है सियाचीन ग्लेशियर में पाकिस्तान का अपनी सेनाओं को मजबूत बनाना और जम्मू कश्मीर के अन्य क्षेत्र में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर समय पर मंडराने वाली कार्यवाही करना है। इसलिए वर्तमान परिवर्तित अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में देश का चहुमुखी सुरक्षा के लिये सम्भावित विपक्षियों की सैन्य तैयारियों के प्रति सर्तकता बरतनी होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 दिवाकर विक्रम सिंह "चीन की तैयारी पर ध्यान दीजिए जनाब" नेशनल दुनिया 14 मार्च 2014 पृष्ठ संख्या 8

2 डा. लक्ष्मी शंकर यादव "बढ़ती सैन्य ताकत से डरता चीन" राष्ट्रीय सहारा 10 मार्च 2014 पृष्ठ संख्या 10

3 पंकज चंतुर्वेदी "सुरक्षा व्यवस्था का झोल ठीक करने की चेतावनी" नेशनल दुनिया 12 मार्च 2014 पृष्ठ संख्या 8

4 प्रकाश सिंह, "राष्ट्रीय सुरक्षा बने प्राथिमता" राष्ट्रीय सहारा, 22 मार्च, 2014

5 प्रो. चिंतामणि महापात्रा, "कुहासे में भारत-अमेरिका सम्बन्ध" राष्ट्रीय सहारा, 28 दिसम्बर 2013

6 डा. जी. बालचंद्रन, "फिर भी दोनों को साथ चलना है" राष्ट्रीय सहारा, 28 दिसम्बर, 2014

7 पंकज चंतुर्वेदी "सुरक्षा व्यवस्था का झोल ठीक करने की चेतावनी" नेशनल दुनिया 12 मार्च 2014 पृष्ठ संख्या 8

8 प्रकाश सिंह, "राष्ट्रीय सुरक्षा बने प्राथिमता" राष्ट्रीय सहारा, 22 मार्च, 2014

9 प्रो. चिंतामणि महापात्रा, "कुहासे में भारत-अमेरिका सम्बन्ध" राष्ट्रीय सहारा, 28 दिसम्बर 2013

10 डा. जी. बालचंद्रन, "फिर भी दोनों को साथ चलना है" राष्ट्रीय सहारा, 28 दिसम्बर, 2014